3

पुराने नियम में स्त्रियां

पवित्र शास्त्र में सृष्टि के आरम्भ से लेकर आरम्भिक कलीसिया के दिनों तक परमेश्वर की योजना में स्त्री की भूमिका को परिभाषित करके समझाया गया है। परमेश्वर के वचन में हमारे लिए दिए गए उदाहरणों में स्त्रियों का अपने घराने, अपने समाज और अपनी कौम पर पड़ने वाले अच्छे या बुरे ज़बर्दस्त प्रभाव की बात।

अदन की वाटिका में स्त्री

वाटिका में आदम और हव्वा के पाप करके गिरने के आसपास की घटनाओं की श्रृंखला से नेतृत्व की उन भूमिकाओं की समझ आती है, जो परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए चाही थीं।

शैतान द्वारा परीक्षा

परमेश्वर ने यह कहते हुए कि ''... तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना; क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' (उत्पत्ति 2:16, 17) आदमी से सीधे बात की। इस मनाही की बात बाद में परमेश्वर ने सीधे हव्वा से की या अधिक सम्भावना है कि हव्वा को यह संदेश आदम द्वारा पहुंचाया गया था। उसके पास लाए जाने के समय हव्वा को मालूम था कि भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष से खाने की मनाही है, क्योंकि सर्प से उसने कहा कि ''इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न ही उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे'' (उत्पत्ति 3:2, 3)।

उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी से हमें पता चल सकता है कि हव्वा ने फल को देखा, जिससे वह पाप करने की ओर आकर्षित हुई। (1) यह ''खाने के लिए अच्छा'' था, (2) यह ''देखने में मनभाऊ'' था, और (3) यह ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य'' था (उत्पत्ति 3:6)। सर्प ने कहा था कि वह ''भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो'' जाएगी (उत्पत्ति 3:5ख)। उनके फल खा लेने के बाद परमेश्वर ने कहा, ''मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया'' है (उत्पत्ति 3:22क)। जहां तक वचन की बात है, इससे केवल एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है: और वह है कि फल खाने से पहले उन्हें भलाई और बुराई का ज्ञान नहीं था। इसका अर्थ यह होना चाहिए कि नैतिकता के विषय में वे भोले-भाले थे और ऐसे मामलों में आज़माए नहीं जा सकते थे।

फल खा लेने के बाद वे भलाई और बुराई से अनजान नहीं रहे थे, परन्तु अब उनमें वह भोलापन भी नहीं रहा था। पहले बिना नैतिक समझ के अब वे परमेश्वर के नैतिक ज्ञान के क्षेत्र में थे।

यह निष्कर्ष है मानने में नहीं कि भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल खाकर आदम और हव्वा ने अपने स्वभाव को बिगाड़ लिया आमान्य! उन्हें बुराई का ही नहीं, बल्कि भलाई का ज्ञान भी मिला। यदि बुराई का ज्ञान उन्हें बुरा बना सकता था तो भलाई का ज्ञान उन्हें भला क्यों नहीं बना सकता था? निषेधित फल को खाने से उनके स्वभाव में बिगाड़ नहीं हुआ, बल्कि अवज्ञा के कार्य ने उनके लिए उस योग्तया का द्वार खोल दिया जो परमेश्वर की है। फल खाने से पहले वे छोटे बच्चों की तरह भलाई और बुराई के ज्ञान से रहित थे, जिस कारण उनमें बच्चों वाला भोलापन था (व्यवस्थाविवरण 1:39; यशायाह 7:16)। परमेश्वर भलाई और बुराई के अपने ज्ञान का सही इस्तेमाल करता है, परन्तु मनुष्य उस ज्ञान का इस्तेमाल वैसे नहीं कर सकता जैसे परमेश्वर करता है। स्पष्टतया यही कारण है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए चाहा कि वे भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष से न खाएं: उसे मालूम था कि भलाई करना और बुराई का इनकार करने में से एक को चुनने में उन्हें कठिनाई होगी। परमेश्वर ने कठोर दण्ड ठहरा दिया, क्योंकि वह उन्हें उस फल को खाने के लिए उकसाना नहीं चाहता था, जिससे वे उसके नैतिक और आत्मिक नियम का विरोध करके संवदेनशील बन जाएं।

परमेश्वर की ओर से दण्ड

उत्पत्ति 3:9, 11 के अनुसार परमेश्वर ने पहले आदम से बात की और उससे पूछा कि उसकी आज्ञा को क्यों तोड़ा गया। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि हव्वा के पति के रूप में आदम की भूमिका पहले से ही नेतृत्व वाली थी, जिसका अर्थ यह था कि उसकी ज़िम्मेदारी थी और हव्वा से अधिक जवाबदेही उसकी थी। हम पढ़ते हैं, ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया'' (रोमियों 5:12); ''और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:22)। परन्तु इस पाप से आदम का उतना नाता नहीं था जितना हव्वा का, क्योंकि 1 तीमुथियुस 2:14 कहता है कि ''आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई।''

उन्हें दिए गए दण्डों में ऐसी शर्तों को जोड़ा गया, जो पाप करने से पहले नहीं थीं। (1) पाप होने से पहले सांप पेट के बल नहीं चलता था, बाद में उसे अन्य सब जीवों से अधिक शाप दिया गया कि वह जीवन भर पेट के बल चले और मिट्टी खाए। (2) जनने की स्त्री की पीड़ाएं बढ़ गईं, और आदम ने उस पर प्रभुता करनी थी। इससे पहले जनने की पीड़ाएं कम रही होंगी, यदि आदमी का पहले ही उस पर अधिकार था तो यह अपराध के कारण स्त्री को परमेश्वर की ओर से दिया गया नहीं था। (3) पृथ्वी को मनुष्य को दिए गए दण्ड के रूप में शापित किया गया (उत्पत्ति 3:17-19)। इसके अलावा उसने मिट्टी में ही

लौट जाना था, जहां से उसे लिया गया था। ये परमेश्वर द्वारा दिए गए दण्ड होंगे जो अपराध होने से पहले नहीं थे।

आदमी के लिए आरम्भ से ही परमेश्वर की इच्छा होगी कि वह अगुआई करे, भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष से खाने से पहले, परन्तु अगुआई की घोषित भूमिका उसे नहीं दी गई (उत्पत्ति 3:16)। ''प्रभुता'' के लिए इब्रानी शब्द *mashal* है, जिसका अनुवाद ''प्रभुता'' (उत्पत्ति 37:8; व्यवस्थाविवरण 15:6) या ''अधिकार'' (निर्गमन 21:8) हो सकता है। संसार के पूरे इतिहास में, नेतृत्व की भूमिका पुरुष की ही रही है। अधिकतर समाजों में स्त्रियों की अपेक्षा मनुष्य जाति की भलाई का ध्यान आदमियों ने रखा है।

परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा को दिए गए दण्ड का आज भी होना इस बात का संकेत हो सकता है कि उसी दण्ड के रूप में आदमी की प्रभुता आज भी उस पर बनी हुई है। यदि यह वही दण्ड नहीं है तो यह अपवाद है। यदि परमेश्वर ने उसे हटाया नहीं है तो यह वही है। क्या वह आज भी चाहता है कि पति/पत्नी के सम्बन्धों और अन्य सम्बन्धों में भी पुरुष की प्रभुता वाली भूमिका हो?

इस मामले में परमेश्वर की इच्छा को समझना आवश्यक है, क्योंकि नया नियम अदन की वाटिका वाली इसी घटना पर स्त्री की भूमिका का संकेत देता और सिखाता है। आदम और हव्वा के पाप के लिए दिए जाने वाले दण्ड को न समझ पाना बाइबल की अन्य बातों में नासमझी पैदा कर सकता है। हमारा उद्देश्य अपने विचारों की पुष्टि करने वाली शिक्षा को ढूंढ़ना नहीं, बल्कि हर बात में परमेश्वर की इच्छा को समझने की कोशिश करना होना चाहिए।

किसी शिक्षा को समझने के लिए, कई बार यह आवश्यक हो जाता है कि उसे व्यवहार में लागू कैसे किया जाता है। अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के पाप करने के बाद अगुआई कौन करने लगा? समाज में, घर में, और धार्मिक मामलों में परमेश्वर के अगुवे की भूमिका में किसे देखा गया? मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले, व्यवस्था में, और इस्राएलियों के प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने तक स्त्रियों की भूमिका क्या थी?

व्यवस्था दिए जाने से पहले स्त्रियां

बाइबल व्यवस्था से पहले स्त्रियों को कम नहीं बताती, चाहे कई लोगों को लगता है कि वंशावलियों की सूची पुरुषों के नाम के आधार पर देना स्त्रियों का अपमान है। अब्राहम और नाहोर की पत्नियां तक आने से पहले (उत्पत्ति 11:29) वंशावलियों में पुत्रों का उल्लेख है, पत्नियों और बेटियों का संकेत हो सकता है, पर उनका नाम नहीं है (उत्पत्ति 5:1–32; 10:1–32; 11:10–28)।

अब्राहम द्वारा आज्ञा मानने के कारण, परमेश्वर ने उसके साथ वाचा बान्धी (उत्पत्ति 22:16–18)। यह वाचा घर में साराह की नहीं, बल्कि अब्राहम की अगुआई के कारण और आगे अब्राहम के वंश के साथ बढ़ाई गई (उत्पत्ति 18:19)। अपने पुत्रों के दुष्चरित्र के लिए एली को ज़िम्मेदार ठहराया गया था, न कि उसकी पत्नी को (1 शमूएल 2:27–36;

3:13)। इस काल के आदमियों को अधिक ज़िम्मेदारियां दी गईं, परन्तु उनका न्याय भी अधिक कठोरता से हुआ और उन्हें दण्ड भी अधिक कठोर मिला।

साराह के साथ सम्बन्ध में अब्राहम ही अगुआ रहा होगा। परमेश्वर ने उसे दिखाई देकर अपना देश छोड़ने के निर्देश दिए (उत्पत्ति 12:1-3)। अब्राहम के साथ बांधी गई उसकी वाचा को खतने से मुहर किया जाना था, जो केवल पुरुषों पर लागू होने वाला चिह्न था (उत्पत्ति 17)। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक औरवाचा बान्धी और इसे उसके नर वंशजों अर्थात इसहाक और याकूब के साथ दोहराया यानी उसने उन्हें आशीष देने और उन्हें बड़ा बनाने अर्थात उन्हें एक बड़ी जाति बनाने, उनके द्वारा पृथ्वी के सब घरानों को आशीष देने और उनसे कनान देश देने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 12:1-3; 17:8; 22:18; 26:3-5; 28:13, 14)।

अकाल के दौरान परमेश्वर ने इस्राएलियों को बनाए रखने के लिए यूसुफ का इस्तेमाल किया (उत्पत्ति 50:20)। साराह, रिबका, राखेल और लेया जैसी स्त्रियां पुरखाओं के युग में महत्वपूर्ण थी, परन्तु परमेश्वर ने परिवारों के प्रतिनिधियों के रूप में स्त्रियों के साथ नहीं बल्कि पुरुषों से व्यवहार किया। बारह गोत्र याकूब के पुत्रों के नाम पर थे, न कि उसकी बेटी दीना या उसकी संतान के नाम पर। प्रतिज्ञा यहूदा से की गई थी जो पुरुष था कि राज डण्डा उसी के गोत्र में रहेगा (उत्पत्ति 49:10)।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से निकालने में अगुआई के लिए (निर्गमन 7:1, 2) और इस्राएलियों को जंगल में अगुआई देने के लिए मूसा और हारून को चुना था। उसने मूसा के द्वारा व्यवस्था दी (यूहन्ना 1:17)। परमेश्वर ने मिरियम, फिरौन की बेटी और मूसा की पत्नी सिप्पोरा जैसी स्त्रियों को महत्वपूर्ण भूमिकाएं दीं,परन्तु उसने उन्हें मूसा, हारून, यहोशू (निर्गमन 17:9), कालेब (गिनती 14:24), सत्तर प्राचीनों (निर्गमन 24:1; गिनती 11:16, 25) और अन्य पुरुषों वाली अगुआई करने की पदवियां नहीं दीं। एलदाद और मेदाद जैसे आदमी भविष्यवाणी करते थे (गिनती 11:26)। बाइबल के लेख पुरुषों को दिए गए प्रकाशनों को मिलाकर बनते हैं। स्त्रियों द्वारा की गई केवल दो अर्थात मिरियम की और हुल्दा की ही, भविष्यवाणियां लिखी गई है, और इन भविष्यवक्तिनों को इतना महत्व नहीं दिया गया।

मिरियम को नबिया कहा तो गया है (निर्गमन 15:20क), परन्तु उसकी लिखित बातें स्त्रियों के लिए ही कही गईं, जिसमें वह लाल समुद्र पार करने के बाद आनन्द करने में उनकी अगुआई कर रही थी (निर्गमन 15:20ख, 21)। ऐसा कहीं लिखित में नहीं मिलता कि उसने पुरुषों की अगुआई की हो। हुल्दा ने पुरुषों के पास भविष्यवाणी की, जो उसे एकान्त में मिलने आए थे (2 राजाओं 22:14-20)। इस पूरे काल में परमेश्वर ने अगुआई का काम इस्राएली पुरुषों को ही दिया।

व्यवस्था के अधीन स्त्रियां

हम मूसा की व्यवस्था के अधीन पुरुषों के लिए आवश्यक प्रबन्धकीय भूमिका को देखना जारी रखते हैं।

न्यायियों के समय

न्यायियों के समय में दबोरा को छोड़ दें तो कौमी अगुवे पुरुष ही थे। वह एक नबिया थी और स्त्री की लीडरशिप के उदाहरण के रूप में महत्वपूर्ण है। बाइबल कोई संदेह नहीं रहने देती कि उसने इस्राएल का न्याय किया और वह भविष्यवक्तिन थी (न्यायियों 4:4, 5)। परन्तु हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसने प्रभु की मण्डली के धार्मिक मामलों में अगुआई नहीं दी। व्यवस्था में यह ज़िम्मेदारी केवल लेवी के गोत्र के पुरुषों को दी गई थी (गिनती 1:50; 3:9, 10)।

दबोरा के कारण उठने वाले प्रश्नों का उत्तर बाइबल में नहीं दिया गया। क्या उसे इस पद पर लोगों ने नियुक्त किया? क्या न्यायियों की नियुक्ति परमेश्वर की पूरी आशीष के साथ होती थी? क्या परमेश्वर न्यायियों को इस्राएल के राजाओं की तरह नियुक्ति की अनुमति देता था (होशे 13:11)? क्या दबोरा ने यह भूमिका इसलिए ली, क्योंकि पुरुष अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा रहे थे? क्या परमेश्वर ने दबोरा को न्यायी नियुक्त किया क्योंकि देश के इतिहास में बाद में उठने वाली अधोगति की तरह इस्राएल की हालत पतली हो गई थी? परमेश्वर ने इस्राएल से कहा, ''हे मेरी प्रजा, तेरे अगुवे तुझे भटकाते हैं, और तेरे चलने का मार्ग भुला देते हैं'' (यशायाह 3:12)।

दबोरा ने जिन परिस्थितियों में भविष्यवाणियां की उनमें से किसी का किसी को बताया नहीं गया है। उसने परमेश्वर के लोगों की मण्डली को सम्बोधित किया या उसने छोटे से निजी समूहों से बात की? उसने अपनी भविष्यवाणियां दूसरों द्वारा पढ़े जाने के लिए लिखीं या उसने समूहों या व्यक्तियों के पास भविष्यवाणियां कीं? क्या उसने धार्मिक या नागरिक मामलों की भविष्यवाणी की, हमें नहीं मालूम। इस कारण हमें दबोरा के न्यायी या भविष्यवक्तिन होने पर स्त्री की भूमिका का विचार बनाने की कोशिश करने में सावधानी बरतनी चाहिए। हो सकता है देने की तरह परमेश्वर ने उसे अनुचित दबाव में न्यायी बनने की अनुमति दी हो, जैसे राजाओं की अनुमति दी। नबिया के रूप में उसने लोगों के बड़े समूह या परमेश्वर के लोगों की धार्मिक मण्डली को कभी सम्बोधित नहीं किया होगा।

इस काल के दौरान होने वाली राहाब, शिमशोन की माता, नाओमी, रूत और हन्ना अन्य महान स्त्रियां थीं। दबोरा को छोड़ इनमें से किसी भी स्त्री ने अगुआई का काम नहीं किया और न ही वचन में लिखा है कि वे यहोशू की तरह अपने परिवारों की ओर से बात करती थीं (यहोशू 24:15)। इस्राएल के सबसे अधिक भ्रष्ट होने के समय में भी जब पुरुष धार्मिक लीडरशिप की भूमिकाओं को लेने के योग्य न थे, तो स्त्रियों के ऐसी भूमिकाएं लेने की बात नहीं मिलती।

राजाओं के समय में

हो सकता है कि हमें इस बात का पूरा महत्व समझ न आए कि परमेश्वर ने इस्राएल में पुरुषों को ही राजा क्यों बनाया। इस्राएल में दाऊद के अधीन सेवा करने वाले सभी सैनिक, धार्मिक और नागरिक अगुवे पुरुष ही थे (1 इतिहास 23-27)। हम इसे पूर्णतया

संस्कृति की बात कह सकते हैं, कुछ मामलों को छोड़ में जहां परमेश्वर ने चयन किया। यदि यह उसके उद्देश्यों के अनुसार होता तो परमेश्वर अगुआई की भूमिका में स्त्रियों को नियुक्त कर सकता था या वह दाऊद को ऐसा करने का निर्देश दे सकता था जो स्वयं भी नबी था। सुलैमान भी, जिसे परमेश्वर ने अन्य सब हाकिमों से बुद्धिमान बनाया अपनी सरकार में अगुवों के रूप में केवल पुरुषों को ही रखा था (1 राजाओं 4:1-19)।

हम दुष्ट स्त्रियों के बारे में पढ़ते हैं, जिन्होंने सरकार का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। इज़ेबेल ने नाबोत की मृत्यु का प्रबन्ध करने के लिए राजा अहाब की मुहर का इस्तेमाल किया ताकि राजा को उसकी दाख की बारी मिल सके (1 राजाओं 21:7-10)। अपने पुत्र अहज़्याह की मृत्यु के बाद सिंहासन के सभी सम्भावित वारिसों को मरवाकर प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया (2 राजाओं 11:1-3)।

सारांश

पुराने नियम की कई स्त्रियों ने कई मामलों में पुरुषों से बढ़कर समझदारी, बुद्धिमत्ता, गुण, और साहस दिखाया। किसी भी प्रकार से वे योग्यता में पुरुषों से कम नहीं थीं। धार्मिक समाज तथा सरकार में चाहे उन्हें अगुआई का काम नहीं दिया गया परन्तु वे अपने समझदारी भरे कामों तथा विनम्र सेवा के द्वारा महान बनीं।

मूसा की व्यवस्था में स्त्रियों के विषय में प्रावधान

परमेश्वर ने मूसा को दो समूहों में पुरुषों की गिनती करने के लिए कहा था: एक उनकी जिन्होंने सेना में सेवा करनी थी (गिनती 1:1-3) और दूसरी उनकी धार्मिक मामलों में सेवा करनी थी (गिनती 1:20-50; 3:5-10, 14, 15)। स्त्रियों को सैनिक सेवा या याजकाई के काम के लिए नियुक्त नहीं किया जाता था। परमेश्वर ने मूसा से नर बालकों की गिनती करने को कहा था, पर इस्राएल में अपने लोगों के रूप में स्त्रियों की नहीं (गिनती 3:40, 45; निर्गमन 13:12; 22:29)।

इस्राएल के हर पुरुष को साल में तीन बार यहोवा के सामने पेश होना आवश्यक था (निर्गमन 23:17)। भेंट की हुई चीज़ें खाने की अनुमति याजकों के गोत्र में से पुरुषों को थी (लैव्यव्यवस्था 6:18, 29; 7:6)।

स्त्री के किसी मादा बच्चे को जन्म देने पर नर बालक के जन्म देने से अधिक समय शुद्धिकरण के लिए आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 12:1-8)। गुलामों को युद्ध में लिए जाने के समय कुआंरियों को छोड़ हर पुरुष व स्त्री को मार डाला जाना होता था (गिनती 31:17, 18)।

पुत्रों को परिवार की विरासत मिलती थी और पहिलौठे पुत्र को दोहरा भाग दिया जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:16, 17)। परिवार का नाम पुरुषों के द्वारा जीवित रखी जाती थी। यदि किसी पति की मृत्यु हो जाए तो उसका घराना बनाने और मरे हुए का नाम बनाए रखने के लिए उसकी पत्नी उसके भाई के बच्चों को जन्म देती थी (व्यवस्थाविवरण 25:5-10)। पति को नि:संतान मर जाने वाली पत्नी का घर नहीं बनाना होता था। पुरुषों की कई पत्नियां होती थीं पर स्त्रियों के एक से अधिक पति होने की बात नहीं मिलती।

हो सकता है कि हमें पता न चले कि स्त्रियों का पुरुषों वाले कपड़े पहनना या पुरुषों का स्त्रियों के कपड़े पहनना परमेश्वर की नज़र में ''घिनौना'' क्यों था (व्यवस्थाविवरण 22:5)। शायद यह इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अलग बनाया था और वह चाहता था कि वे अपनी अलग भूमिका को स्वीकार करें, विपरीत लिंग के जैसे दिखने से बचें और विपरीत लिंग की भूमिकाएं लेने से परहेज करें। नये नियम में स्त्रियों की सी इच्छाएं रखने वाले पुरुषों की निन्दा (1 कुरिन्थियों 6:9) से सुझाव मिलता है कि पुरुषों का स्त्रियों जैसा दिखना और स्त्रियों का पुरुषों जैसा दिखना आज भी परमेश्वर को घिनौना लगता है। स्त्री के बालों की लम्बाई और पुरुष के बालों की लम्बाई में अन्तर किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर ने स्त्री को बनाया ताकि लम्बे बाल उसका शृंगार हों पर पुरुष के बाल लम्बे होना लज्जा की बात है (1 कुरिन्थियों 11:14, 15)। पुरुषों तथा स्त्रियों की अलग-अलग भूमिकाओं के लिए परमेश्वर की मंशा उनके द्वारा अपने आप को प्रस्तुत किए जाने के ढंग में देखी जा सकती है।

व्यवस्था के अनुसार पुरुष के मन्नत मानने का मूल्यांकन चांदी के पचास शेकेल था जबकि स्त्री का मूल्यांकन बीस से साठ साल की उम्र का तीस शेकेल था (लैव्यव्यवस्था 27:1-7)।[1] जो लोग निर्धन होते थे, उनका मूल्यांकन याजक के निर्णय के अनुसार होता

था (लैव्यव्यवस्था 27:8)। इसका अर्थ यह हो सकता है कि मूल्यांकन व्यक्ति के मूल्य के बजाय उसके अदा करने की योग्यता पर अधिक आधारित था। कमाई करने वाले होने के कारण पुरुष आर्थिक रूप में स्त्रियों से अधिक चुकाने के योग्य होते होंगे।

पुरुषों को ही उनकी मन्नतों से बांधा जाता था। यदि किसी पिता या पति ने अपनी बेटी या पत्नी को मन्नत मानने से मना किया, तो वह मन्नत पूरी करने को बाध्य नहीं होती थी। पुरुषों को परिवार की स्त्रियों की मन्नतों की पुष्टि करने या उन्हें रद्द करने का अधिकार था (गिनती 30:1-15)। स्त्रियों के लिए पुरुषों द्वारा मानी गई मन्नतों को प्रभावित करने का कोई प्रावधान नहीं था। फिर यह घर में पुरुष के नेतृत्व की ओर ध्यान दिलाता है।

टिप्पणी

[1]पुरुष के लिए बीस और स्त्री के लिए पांच से बीस वर्ष तक दस शेकेल; एक माह से पांच वर्ष के नर बालक के लिए पांच और बालिका के लिए तीन; साठ से ऊपर पुरुष के लिए पन्द्रह और स्त्री के लिए दस शेकेल का मूल्यांकन था।

बाइबल में भविष्यवक्तिनें

बाइबल पांच स्त्रियों को भविष्यवक्तिनों के बारे में बताती है: जिनमें से दो असली भविष्यवक्तिनें, हुल्दा (2 राजाओं 22:14; 2 इतिहास 34:22) और हन्नाह (लूका 2:36) और दो झूठी भविष्यवक्तिनें नोअद्याह (नेहम्याह 6:14) और अपोकलिप्टिक इज़ेबेल (प्रकाशितवाक्य 2:20) है। यशायाह की पत्नी का जिसे भविष्यवक्तिन कहा जाता है (यशायाह 8:3) या फिलिप्पुस की बेटियों का (प्रेरितों 21:9) जो कलीसिया के आरम्भिक दिनों में भविष्यवाणी करती थीं, नाम नहीं दिया गया है।

हुल्दा राजा के प्रतिनिधियों के साथ व्यक्तिगत सलाहकार थी (2 राजाओं 22:14-20; 2 इतिहास 34:22-28)। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उसने आत्मिक मामलों में अगुआई की हो या परमेश्वर के लोगों की मण्डली को सम्बोधित किया हो।

हन्नाह मन्दिर में रहती थी। बालक यीशु को देखने के बाद वह ''उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उस बालक के विषय में बातें करने लगी'' (लूका 2:38ख)। हमें उसकी भविष्यवाणियों की लम्बाई नहीं बताई गई, वह मन्दिर में कहां थी या वह व्यक्तिगत रूप से भविष्यवाणी करती थी या लोगों के बड़े समूह में। स्त्रियां, स्त्रियों के आंगन में जा सकती थीं, पर वे मन्दिर में जहां केवल औपचारिक रूप से शुद्ध किए पुरुष

ही जा सकते थे, आगे प्रवेश नहीं कर सकती थीं। हम यह मान सकते हैं कि वह लगातार भविष्यवाणी किया करती थी, परन्तु हम यह सिद्ध नहीं कर सकते कि उसकी भविष्यवाणियां पास से गुजरने वालों के लिए मसीहा के जन्म की बातों से अधिक होती थीं। बाइबल में ऐसा कोई निर्णायक प्रमाण नहीं है कि वह आम सभाओं में या मन्दिर की सेवाओं के भाग के रूप में भविष्यवाणी करती थी।

यशायाह की पत्नी के बारे में अधिक जानकारी नहीं दी गई, जिससे हमें यह समझने में सहायता मिल सके कि वह क्या करती थी। हो सकता है कि उसको भविष्यवक्तिन इसलिए कहते हों क्योंकि वह एक भविष्यवक्ता की पत्नी थी या वह भविष्यवाणी कर सकती थी। यदि वह भविष्यवाणी करती थी तो हमें नहीं मालूम की उसने क्या, कब, कहां और किस के पास भविष्यवाणी की। यही बात फिलिप्पुस की कुंआरी बेटियों की है।

भविष्यवक्तिनों द्वारा कही गई भविष्यवाणी की बातें केवल हुल्दा (2 राजाओं 22:14-22) और मिरियम (निर्गमन 15:20, 21) के बारे में है। ये भविष्यिवाणियां पुरुषों और स्त्रियों की सार्वजनिक सभाओं के लिए नहीं थीं। हमें किसी भविष्यवक्तिन की भविष्यवाणी की कोई लिखित बात नहीं मिलती। बाइबल की कोई भी बात नहीं है जो निर्विवाद रूप से यह कहती हो कि पुराने या नये नियम की स्त्री ने परमेश्वर के लोगों को औपचारिक अर्थात सार्वजनिक इकट्ठ में सम्बोधित किया हो। परमेश्वर ने परमेश्वर के लोगों की मण्डलियों को सम्बोधित करने और पवित्र शास्त्र को लिखवाने के लिए पुरुषों का ही इस्तेमाल किया।